ई-समाचार

द्विमासिक समाचार पत्रिका

अंक - 06 | जुलाई-अगस्त | वर्ष - 2015

स्टाफ क्वाटर का उद्घाटन

संस्थान निदेशक प्रो. आर.वी. राज कुमार ने दिनांक 18.07.2015 को संस्थान के स्थाई परिसर अरगुल में "सी टाइप" स्टाफ क्वाटर तथा डिस्पेंसरी का उद्घाटन किया। सी टाइप क्वाटर के अधीन 40 फ्लैट्स का निर्माण किया गया है। वर्तमान में डिस्पेंसरी का संचालन स्टाफ क्वाटर से ही किया जा रहा है।

महानदी छात्रावास का उद्घाटन

संस्थान के स्थाई परिसर अरगुल में दिनांक 20 जुलाई 2015 को महानदी छात्रावास का उद्घाटन अधिशासी मंडल के अध्यक्ष श्री एस.के रुंगटा के कर कमलों द्वारा किया गया। महानदी छात्रावस का निर्माण 800 पुरुष छात्रों के लिए किया गया है। श्री रुंगटा ने संस्थान के सभी सदस्यों को स्थाई परिसर में प्रवेश करने की बधाई दी और कहा कि वर्तमान में थोड़ी बहुत

परेशानियों अवश्य होंगी पर यह आपका अपना परिसर जिसे धीर-धीरे आप सभी को इसे मूर्त रूप देना है। इस अवसर संस्थान निदेशक प्रो. आर. वी. राजकुमार ने अपने संबोधन में कहा कि जब मैंने कार्यभार ग्रहण किया था उसी दिन यह शपथ ली थी कि जल्द से जल्द हम अपने स्थाई परिसर से अपना कार्य करना प्रारंभ करेंगे। आज हमने इसका आगाज़ कर दिया है और मैं आशा व्यक्त करता हूँ कि आगामी शैक्षणिक सत्र संपूर्ण रूप से हमारे स्थाई परिसर से प्रारंभ होगा। परिसर में 24 घंटे सुरक्षा व्यवस्था , डॉक्टरों के साथ डिस्पेंसरी, जलापूर्ति हमेशा उपलब्ध रहेगी। अभी स्थाई परिसर में कैफेटेरिया, खेल-कूद मैदान, कैंटीन, एटीएम एवं संचार की आवश्यकताओं पर भी ध्यान दिया गया है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि यह परिसर आपका इसे स्वच्छ रखने की आपकी जिम्मेदारी है। कार्यक्रम के अंत में अधिशासी मंडल के अध्यक्ष श्री रुंगटा एवं संस्थान निदेशक ने अन्य वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ परिसर में पौधरोपण किया।

आठवां संस्थान दिवस

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर द्वारा दिनांक 22 जुलाई 2015 को संस्थान प्रेक्षागृह, सांमतपुरी परिसर में आठवां स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री गोकुल चंद्र पति, भा.प्र.से., मुख्य सचिव,

ओडिशा सरकार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री पति ने अपने संबोधन में छात्रों को हमेशा जागरुक होने और उन्हें किसी भी परिस्थिति में निराश न होने की अपील की। इसके साथ ही उन्होंने वर्तमान युग में प्रौद्योगिकी की महत्ता पर प्रकाश डाला और कहा कि समय के साथ इसके उदाहरण को परिवर्तित करने के साथ-साथ छात्रों को समाज के सबसे बड़े वर्ग के लाभ के लिए इसके कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने होगा। इसके साथ ही उन्होंने विकास एवं पर्यावरण पर प्रौद्योगिकी के फ्लिप प्रभाव पर सावधान होने की अपली की। उन्होंने कहा कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर और ओडिशा राज्य सरकार को संयुक्त रूप से कार्य करते हुए विभिन्न प्रौद्योगिकीय व्यवधान को दूर करने तथा गरीब तबके लोगों को लाभ पहुँचाने लिए नवाचार समाधान का परिनियोजन कर सकते है। उन्होंने इस अवसर पर संस्थान के सभी सदस्यों को स्थाई परिसर में प्रथम चरण पर स्थानांतरण पर बधाई दी। इसके साथ ही उन्होंने संस्थान के लक्ष्यों को प्राप्त करने में हर संभव सहायता प्रदान करने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर संस्थान निदेशक प्रो. आर. वी. राज कुमार ने अपने संबोधन में श्री पति द्वारा संस्थान को निरंतर रूप से सहायता के साथ मार्गदर्शन प्रदान करने पर मुक्त हृदय से धन्यवाद ज्ञापित किया और कहा कि उनकी सहायता से संस्थान अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने पाने में सक्षम हो पाया है। अपने संबोधन में प्रो. आर. वी. राज कुमार ने अद्वितीय शैक्षणिक उत्कृष्टता और अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों की जानकारी प्रदान की। उन्होंने अपने संबोधन में मुख्य सचिव को आशान्वित किया कि संस्थान राज्य सरकार को सभी उद्यमों में उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी एवं शैक्षणिक सहायता प्रदान करेगा। तदोपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें स्पीक मकै भुवनेश्वर चैप्टर की सहायता के साथ पं. प्रसनजीत पोद्दार द्वारा समर्थित पं. तरूण भट्टाचार्य ने संतूर वादन की प्रस्तुति की। उनकी प्रस्तुति ने उपस्थित श्रोताओं को सम्मोहित कर लिया। इसके साथ संस्थान छात्रों द्वारा ईस्टर्न डांस एवं लाइट म्युज़िक की भी प्रस्तुति कि गई।

बी.टेक के नवागंतुक छात्रों का पंजीकरण

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर में बी.टेक के नवागंतुक छात्रों का पंजीकरण संस्थान के स्थाई परिसर में संपन्न हुआ। कुल 178 चयनित छात्रों में 160 छात्रों ने पंजीकरण संपन्न किया है। इस अवसर पर संस्थान निदेशक प्रो. आर. वी. राज कुमार, डॉ. एन. सी. साहू, संकायाध्यक्ष (शैक्षणिक कार्य) एवं प्रो. एस.के. महापात्र, संकायाध्यक्ष (छात्र कार्य) भी उपस्थित थे। संस्थान में शिक्षा प्राप्त कर रहे बी.टेक, एम.टेक, एम.एससी तथा पीएच.डी के 881 छात्रों ने इस दौरान पंजीकरण किया। पंजीकरण कार्यक्रम के दौरान छात्र परामर्श टीम ने सहयोग प्रदान किया। उन्होंने न केवल नवांगुतक छात्रों की समस्याओं का समाधान किया बल्कि उन्हें संस्थान में उनके परिसर एवं अन्य विषयों में भी सहायता प्रदान की।

पूर्व राष्ट्रपति को भावभीनी श्रद्धांजलि

यह हम सभी के लिए अत्यंत दुखःद विषय है कि देश के पूर्व राष्ट्रपित भारत रत्न डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम हम हमारे बीच नहीं रहे। डॉ. कलाम हमेशा अपने आपको युवाओं की श्रेणियों में रखे रहते थे। उनका बच्चों के प्रति अपार प्रेम उनके व्यक्तित्व को ओर उभारता था। डॉ. कलाम स्वभाविक तौर पर एक शिक्षक, एक वैज्ञानिक थे लेकिन उन्होंने राष्ट्रपति पद पर एक परिपक्व राजनेता की तरह छाप छोड़ी। डॉक्टर कलाम का मानना था कि असल प्रतिभाएं ग्रामीण भारत में बसती हैं और उन्हें निखारने की जरूरत है। गांव को देश के विकास की धुरी से जोड़ने का उनका एक सपना था। जिस तरह वे राष्ट्रपति दरबार को आम जनता के करीब लाए, वो बाकी राष्ट्रपतियों के लिए भी एक उदाहरण बन गया। राष्ट्रपति पद रिटायर्ड होने के बाद भी लोगों के लिए वे प्रेरणास्रोत बने रहे। अंतिम समय तक वो लगातार सक्रिय रहे और ज्ञान की अलख जगाने का काम करते रहे। राष्ट्र के इस सपूत का निधन अपूरणिय क्षति है।

इस अवसर पर निदेशक महोदय महोदय ने अपने संबोधन में जानकारी दी कि आगामी आयोजित होने वाले चतुर्थ दीक्षांत समारोह के लिए संस्थान ने डॉ. ए.प.जे. अब्दुल कलाम को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित करने का विचार किया जिसके लिए उन्होंने सहर्ष अपनी स्वीकृत प्रदान कर दी थी लेकिन 27 जुलाई 2015 को उनकी अचानक मृत्यु से संस्थान को बहुत बड़ी क्षति हुई है तथा संस्थान उनके आशीर्वचनों से वंचित रह गया है जिसका हम सभी को बड़ा खेद है।

संस्थान उनकी दिवगंत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है।

सीएचईएस पौधरोपण अभियान

पौधरोपण करते हुए निदेशक

निदेशक के साथ उपस्थित अन्य

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर ने अपने स्थाई परिसर में शून्य ऊर्जा आहरण एवं हरित परिसर का निर्माण करने का निर्णय लिया है। परिसर को हरित रूप में निर्माण करने हेतु विभिन्न सरकारी संगठनों सहित केंद्रीय बागवानी प्रयोग स्टेशन से भी सहायता प्राप्त की जा रही है। 29 जुलाई 2015 को आमों के विभिन्न प्रकारों के लगभग 500 पेड़ों का पौधरोपण किया गया जिसका रोपण डॉ. एन.के. कृष्ण कुमार, उप निदेशक सामान्य (बागवानी विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं संस्थान निदेशक प्रो. आर.वी. राज कुमार द्वारा किया गया। सीएचईएस ने इस उद्यम के लिए न केवल आमों के 500 विभिन्न पौधें प्रदान किए बल्कि कुछ सक्रिय अधिकारियों को इस अभियान में शामिल होने के लिए प्रेरित किया जिससे यह परिसर अपनी तरह का एक मिसाल बनकर अन्य लोगों के सामने आए।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संस्थान निदेशक ने सभी अतिथियों, छात्रों को स्वागत किया और स्थाई परिसर में 6000 से अधिक पेड़ों के पौध रोपण की जानकारी से सभी को अवगत कराया। इसके साथ ही डॉ.एन.के.कृष्ण कुमार ने उपस्थित सभी छात्रों एवं अतिथियों को हरित क्रांति के साथ फलों एवं सब्जियों के पोषण, खाद्य सुरक्षा, पौध पोषण उच्च गुणवत्ता वाले मृदा के संपोषण की विशेषताओं की जानकारी दी। इसके साथ ही उन्होंने इस अभियान में उपस्थित छात्रो से प्रौद्योगिकी उपयोग के माध्यम से सूचना प्रौद्योगिकी को इसमें लागू करने का आह्वान किया। कार्यक्रम के अंत में सभी ने पूर्व राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल का स्मरण कर और भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

स्वतंत्रता दिवस

झंडारोहण करते निदेशक

15 अगस्त 2015 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान में 68 वाँ स्वतंत्र दिवस का अनुपालन संस्थान के स्थाई परिसर अरगुल में किया गया। संस्थान के छात्रगण, संकाय सदस्यों एवं स्टाफ सदस्यों ने देश भक्ति की भावना से ओतप्रोत होते हुए कार्यक्रम में पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। प्रो. आर.वी. राज कुमार, निदेशक द्वारा ध्वजारोहण किया गया तदोपरांत छात्रों की म्युज़िक सोसायटी ने देश भक्ति से ओत प्रोत गीत प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर संस्थान निदेशक ने अपने संबोधन में सर्वप्रथम संस्थान वासियों को स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी। अपने संबोधन में संस्थान निदेशक ने आज़ादी कि प्राप्ति के लिए सभी महापुरुषों के त्याग, बलिदानों पर श्रद्धांजलि अर्पित की और कहा कि भाषाएं विविधता के बावजूद भी उन्होंने देशभक्ति की भावना से हम सभी के हृदयों को एकत्रित कर रखा और सफलता प्राप्त की थी। अपने संबोधन में उन्होंने कि संस्थान ने अपनी ठोस योजना तैयार कर ली और उसको कार्यान्वित करना प्रारंभ कर दिया है जिससे कि संस्थान विश्व के स्तरीय शैक्षणिक संस्थानों के रूप में उभर सके और राष्ट्र के स्वप्न को साकार कर सकें। उन्होंने अपने संबंधोन में छात्रों को सही शिक्षा के माध्यम से सशक्त होने, निहित क्षमताओं का उपयोग करने, उद्यम कार्य प्रारंभ करने और अन्य रूपों में "मैक इन इंडिया" के भावी स्वप्नों को साकार करने का आह्वान किया जिससे "मैड इन इंडिया" एक ब्रांड बनकर सभी के सामने आ सके।

सद्भावना दिवस

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी 20 अगस्त 2015 को पूर्व प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी की जन्म तिथि पर सद्भावना दिवस की संकलप्ना के साथ तोषाली भवन, बोर्ड कक्ष में सद्भावना दिवस का अनुपालन किया गया। सद्भावना दिवस का अनुपालन विभिन्न धर्मों, भाषाओं एवं क्षेत्रों के लोगों में राष्ट्रीय एकता और सामुदायिक भावना को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए संस्थान निदेशक प्रो. आर. वी. राज कुमार ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की और अपने संबोधन में कहा कि हम सभी को अपने जीवन में सद्भावना के मूल्यों को ग्रहण करना चाहिए। कार्यक्रम के अंत में संस्थान के कुलसचिव (कार्यवाहक) ने उपस्थित सभी सदस्यों को सद्भावना दिवस की शपथ दिलवाई।

महासागर वैधशाला हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षरित

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर ने 10 अगस्त 2015 को नई दिल्ली में राष्ट्रीय सुविधा के तहत बंगाल की खाड़ी तटीय महासागर वैधशाला की स्थापना हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षरित किया है। इसमें मंत्रालय संगठन जैसे भारतीय महासागर सूचना सेवाएं राष्ट्रीय केंद्र, हैदराबाद एवं राष्ट्रीय महासागर प्रौद्योगिकी संस्थान, चैन्नई आदि शामिल है।

इस समझौता ज्ञापन पर संस्थान निदेशक प्रो. आर.वी. राज कुमार और डॉ. शैलेश नाइक, सचिव, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर संस्थान के प्रो. एस. त्रिपाठी, प्रो.पी. सी. पांडेय, प्रो. यू.सी. मोहांती, प्रो. अविजीत गंगोपाध्याय, मैसाचुसैट्स, यूएसए एवं डॉ.एस.बासु, डॉ. के. सोमसुंदर एवं डॉ. परिवर मैन, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय आदि भी उपस्थिति थे। मंत्रालय ने इस वैधशाला के विकास के लिए 9.23 करोड़ की धन राशि प्रदान की है।

इस योजना के कार्यान्वयन के लिए ओड़िशा सरकार ने पूरी के समीप वैधशाला की स्थापना हेतु भूमि प्रदान की थी।

इस वैधशाला का उपयोग महासागर, पृथ्वी एवं जलवायु मापदंडों एवं प्रणालियों पर निगारनी रखने के लिए किया जाएगा और यह अपनी तरह देश का प्रथम वैधशाला होगा विशेषतः बंगाल खाड़ी के पूर्व तटीय पर। अंतरराष्ट्रीय संगठन जैसे वुड्स होल ओसेनोग्राफिक इंस्टीट्यूट, यूएसए, नैशनल ओसेनोग्राफिक सेंटर ऑफ यूनिवर्सिटी ऑफ साउथहैम्पटन इस उद्यम के सहभागी होंगे। वैधशाला द्वारा प्रेक्षणमूलक दत्तसामग्री का संग्रहण महासागर, पृथ्वी एवं जलवायु की अंतरर्क्रियाओं को समझने में सहायक होगी जिससे भविष्य में जलवायु की भविष्यवाणी की घोषणा करने में सहायता मिलेगी।

संपादकीय..

ई-समाचार का 6वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस अंक में हमने जहाँ संस्थान की गतिविधियों पर प्रकाश डाला है वहीं देश के पूर्व राष्ट्रपति एवं श्रेष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। इस अंक में हमने संस्थान के अरगुल परिसर में आयोजित गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला है। छात्र जीवन कई मायनों में महत्वपूर्ण होता है। छात्र जीवन हमेशा से ही आशाओं का प्रतीक होता है। छात्र जीवन जहां देश की आशाओं को प्रकाशमान करता है वहीं संस्थान की प्रतिष्ठा को बढ़ाने में सहायक होता है। इस शैक्षणिक सत्र में देश की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जे.ई.ई) में उत्तीर्ण कर छात्र अपने भविष्य के मार्ग को प्रशस्त करते हैं। संस्थान में प्रवेश पाए अनेक छात्र ऐसे भी होंगे जिन्होंने पहली बार घर, अपने परिवार, अपने मित्रों को छोड़ा होगा और दुखी होंगे उन सभी छात्रों के लिए यह कठिन समय होगा पर उन सभी को अभी संयम बांधने की आवश्यकता होगी, शुरुआत में आपको थोड़ा बहुत अकेलापन लगेगा लेकिन भुलिए मत आप यहाँ अपने एवं परिवार के सदस्यों के जीवन के वे सभी स्वप्नों को साकार करेंगे जिनके लिए आपने वर्षों से तपस्या की थी। यहाँ आप जीवन में अनुशासन की महत्ता को समझ पाएंगे। संस्थान की गतिविधियां तभी सार्थक हो पाएंगी जब आप सक्रिय होंगे और पूरी तत्परता के साथ अपने लक्ष्यों को हासिल कर पाएंगे। आपके द्वारा संस्थान में बिताए गए हर क्षण आपके जीवन की श्रेष्ठ यादों में से एक होंगे। आपकी सफलता ही संस्थान को गर्वान्वित करेंगी। आपके द्वारा किए जा रहे प्रयासों से ही संस्थान अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होगा। हमें आशा है कि आप संस्थान की अपेक्षाओं पर खरे उतरेंगे और अपना उज्जवल भविष्य करेंगे

जैसा कि विदित है कि देश की प्रगति तभी संभव हो सकती है जब देश के हर गाँव में बसे नागरिक का विकास हो अर्थात गांव का विकास हो। यह तभी संभव है जब उनकी बुनियादी जरुरतों को समझ सके और पूरा कर सके। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के आह्वान पर उन्नत भारत अभियान के अधीन संस्थान ने अरगुल परिसर के समीप अरगुल एवं जोरकुल नामक दो गाँवों को अंगीकृत किया है जहाँ संस्थान उनकी बुनियादी जरुरतों को पूरा करने के साथ उनकी समस्याओं को समाप्त करने के लिए प्रयत्न करेगा।

इस अंक के साहित्य स्तंभ के अधीन हिंदी साहित्य जगत के श्रेष्ठ कवि एवं उपन्यासकार, कहानीकार एवं खड़ी बोली के महत्वपूर्ण कवि श्री मैथलीशरण गुप्त की जन्मजयंती पर उन्हें श्रद्धाजंलि अर्पित की गई है और उनकी जीवन के संक्षिप्त परिचय के साथ उनकी श्रेष्ठ रचना "जीवन की जय हो" संकलित किया गया है।- **नितिन जैन**

सिविल सेवा परीक्षा में संस्थान के पूर्वछात्र को 55वाँ स्थान प्राप्त

देश की सबसे कठिन परीक्षाओं में एक सिविल सेवा परीक्षा 2014 में संस्थान के वर्ष 2008 बैच के श्री अनुराग जयंती ने 55 वां स्थान प्राप्त किया है। उन्होंने वर्ष 2008 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर के विद्युत विज्ञान विद्यापीठ से विद्युत अभियांत्रिकी में प्रौद्योगिती स्नातक (प्रतिष्ठा) की उपाधि प्राप्त की थी। ई-समाचार परिवार की ओर से श्री अनुराग को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

शैक्षणिक गतिविधियाँ

1. डॉ. राजन झा, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 03-04 जुलाई 2015 के दौरान भारतीय विज्ञान अकादमी की छब्बीसवीं मध्य वर्ष बैठक में भाग लिया और "फोटोनिक क्रिस्टल फाइबर मॉडल इंटरफेरोमिटर बेस्ड हाइली सेंसिटिव सेंसर" पर आमंत्रित व्याख्यान प्रस्तुत किया।
2. डॉ. विनोज वेलू, सहायक प्राध्यापक, पृथ्वी महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 03 जुलाई 2015 को भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलूर में आयोजित नैशनल क्लाइमेट साईंस कॉन्फरेंस—2015 में "एटमॉस्फियरिक एरोज़ल एंड द इंडियन समर मानसून रैनफॉल" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
3. डॉ. विनोज वेलू, सहायक प्राध्यापक, पृथ्वी महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 09 जुलाई 2015 के दौरान इम्पिरियल कॉलेज, लंदन में "लिंकेजेस बिटविन एअर पॉल्यूशन एंड क्लाइमेट चेंज इन साउथ एशिया" कार्यशाला में "ए रिमोट लिंक बिटविन डस्ट एरोज़ल एंड द इंडियन समर मानसून रैनफॉल" विषय पर आमंत्रित व्याख्यान प्रस्तुत किया।
4. डॉ. विनोज वेलू, सहायक प्राध्यापक, पृथ्वी महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ को दिनांक 10 जुलाई 2015 के दौरान ग्रांथम रिसर्च इंस्टीट्यूट, लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, लंदन में "डेवल्पिंग नैरेटिव्स ऑफ फ्यूचर क्लाइमेट फॉर साउथदर्न इंडिया" में विशेषज्ञ के रूप आमंत्रित किया गया था।
5. डॉ. पी.पी.दे, सहायक प्राध्यापक, आधारिक संरचना विद्यापीठ ने दिनांक 26-28 जुलाई के दौरान एनवीएनआईटी, सूरत द्वारा एम.टेक थिसिस को मूल्यांकन करने के लिए बाह्य सदस्यों के रूप में आमंत्रित किया था।
6. डॉ. सी. भामिदिप्ति, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 13-25 जुलाई 2015 के दौरान आईज़र भोपाल में एसईआरसी (साईंस एवं इंजीनियरिंग रिसर्च काउंसिल) प्रीपेटरी स्कूल में थियोरिटिकल हाइ थियोरी फिजिक्स में सामान्य थियोरी ऑफ रिलेटिव कोर्स हेतु अतिथि संकाय के रूप में भाग लिया।
7. डॉ. राज कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापकपृथ्वी महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 18 मई से 17 जुलाई 2015 के दौरान भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी द्विपक्षीय विनियम कार्यक्रम के तहत जियोविस्सेनस्कैफटर्न देर क्रिस्चियन-अल्बरेच्ट्स-यूनिवर्सिटेट जू किल, जर्मनी का दौरा किया।

सम्मान

1) डॉ.सी.एस.राउत, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ को दिनांक 05 जुलाई 2015 के दौरान चैन्नई में "वेनस इंटरनैशनल फाउंडेशन (वीआईएफएफए) युवा शोधकर्त्ता" का पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

2) प्रो.आर.के.पंडा, पृथ्वी महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ को जल संसाधन के मुख्य क्षेत्रों में व्यवसायिक योगदान के लिए "इंडियन वाटर रिसोर्सेस सोसायटी" के फैलो के रूप में चुना गया है।

3) डॉ. एस.आर. सामंतराय, विद्युत विज्ञान विद्यापीठ को अभियांत्रिकी श्रेणी में "नासी-स्कोप्स युवा वैज्ञानिक" के रूप में चयनित किया गया है।

उन्नत भारत अभियान– एक पहल

उपयुक्त प्रौद्योगिकी के प्रयोग के माध्यम से ग्रामीण विकास की संकल्पना मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन चलाए जा रहे उन्नत भारत अभियान के कार्यान्वयन के लिए संस्थान पूर्ण रूप से सक्रिय है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण समस्याओं को प्रौद्योगिकी समाधान के माध्यम से कार्यान्वित करना है।

इस कार्यक्रम के तहत संस्थान ने दो 'जोरकुल' एवं 'अरगुल' नामक गांवों को अंगीकृत किया है। इन गांवों की समस्याओं के समाधान प्रथम चरण के दौरान शिक्षा, स्वास्थ्य, शोच, पेयजल, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, उपयुक्त आवासीय

प्रौद्योगिकी, अक्षय ऊर्जा का प्रयोग आदि समस्याएँ सामने ऊभर कर आई। संस्थान की यूबीए प्रकोष्ठ की टीम इन समस्याओं पर कार्य कर रही है। इस दौरान गाँव के निवासियों को यह भी सुनिश्चित किया गया कि वे किसी भी प्रकार की समस्याओं के लिए यूबीए टीम के सदस्यों से संपर्क कर सकते हैं।

68 वें स्वतंत्रता दिवस के दौरान यूबीए प्रकोष्ठ के संकाय सदस्यों ने स्थाई परसिर के समीप स्थित अरगलु गाँव का दौरा किया और वहाँ के जन समूहों एवं विद्यालय प्राध्यापकों से उनकी आवश्यकताओं पर विशेष रूप से चर्चा की। इस कार्यक्रम के अधीन गाँवों में "सोलर स्ट्रीट लाईट" का अधिष्ठापन किया जा चुका है।

नई नियुक्तियाँ

प्रो.जयंत पाल

प्रो.जयंत पाल ने संस्थान में अभ्यागत प्राध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है। वे इससे पूर्व भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर में प्राध्यापक के रूप में कार्यरत थे।

प्रो.ए.के.कपूर

प्रो.ए.के.कपूर ने संस्थान में अभ्यागत प्राध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है। वे इससे पूर्व, भौतिकी विद्यापीठ, हैदराबाद विश्वविद्यालय में कार्यरत थे।

दसवीं राकास की बैठक

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन की दसवीं बैठक संस्थान निदेशक प्रो. आर.वी. राजकुमार की अध्यक्षता में संस्थान बोर्ड कक्ष में दिनांक 27 अगस्त 2015 को आयोजित की गई।

बैठक के दौरान संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए उठाए जा रहे कार्यों की जानकारी दी गई। तत्पश्चात राजभाषा के कार्यान्वयन के लक्ष्यों को प्राप्त करने पर विचार किया गया। इस दौरान आगामी सितंबर माह में आयोजित हिंदी पखवाड़ा से संबंधित विषयों पर चर्चा की गई।

बैठक के दौरान राजभाषा का प्रचार-प्रसार के लिए उठाए जा रहे प्रयासों की सराहना की गई। इस दौरान राजभाषा एकक द्वारा तैयार की गई वेबसाइट की अवलोकन किया। इस संबंध में जानकारी दी गई कि राजभाषा एकक की वेबसाइट में राजभाषा के कार्यान्वयन को प्रभावी बनाने के लिए सभी जानकारियाँ उपलब्ध कराई गई है जिससे संस्थान में हिंदी के प्रति अनुकूल वातावरण तैयार हो सकें। निदेशक महोदय ने वेबसाइट का अवलोकन किया और इसे संस्थान की मुख्य वेबसाइट से जोड़ने हेतु अपनी सहमति प्रदान की। इसके साथ ही हिंदी में टिप्पण कार्यों को बढ़ावा देने के लिए राजभाषा एकक द्वारा एक टिप्पण पुस्तिका तैयार की गई है जिससे भी बैठक के दौरान सर्वसम्मित से छपाने हेतु अनुमति प्रदान की गई।

बैठक के दौरान निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु हर संभव प्रयास पर बल दिया गया।

नए कुलसचिव का आगमन

संस्थान में लंबे कार्यकाल से पड़े कुलसचिव के रिक्त पद पर नियुक्ति कार्य पूर्ण हो चुकी है। संस्थान के कुलसचिव के रूप डॉ. डी गुणसेकरण 01 सितंबर 2015 से अपना कार्यभार में संभालेंगे। डॉ. गुणसेकरण लगभग 15 वर्षों से कुलसचिव पद पर आसीन और प्रशासनिक मामलों में इनकी जानकारियाँ अद्भुत है।

दीक्षांत समारोह सूचना

संस्थान का चुतर्थ दीक्षांत समारोह दिनांक 12 सितंबर 2015 को आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगी। दीक्षांत समारोह कार्यक्रम संस्थान के स्थाई परिसर अरगुल में आयोजित किया जाएगा।

सोल फॉर सॉलेस

संस्थान की सोल फॉर सोलेस और नाईज़र के सामाजिक बाह्य क्लब "जारियाँ" ने संयुक्त तत्वावधान के साथ संस्थान के केजीपी परिसर के समीप झोपड़े में रह रहे बच्चे जिन्होंने किसी कारणवश बुनियादी शिक्षा ग्रहण नहीं की थी, उन्हें शिक्षण प्रदान करने के लिए

कार्य के लिए एक महा अभियान की शुरुआत की गई।

इस कार्यक्रम के तहत शहर के पाँच विद्यालायों ने भाग लिया और उन्हें विद्यालय में पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने के साथ उन्हें वित्तीय सुविधा प्रदान करने जैसी सुविधा प्रदान करने का आश्वासन दिया जिससे उनका बौद्धिक विकास हो। इस महा मुहीम के अधीन लगभग 24 छात्रों इन विद्यालालयों में भर्ती कराया गया।

सामाजिक कल्याण सोसायटी ने दिनांक 08 अगस्त 2015 को संस्थान के स्थाई परिसर अरगुल में पौधरोपण के साथ अपना कार्य प्रारंभ किया। इस दौरान उन्होंने लगभग 200 सौगान पौधों का पौधरोपण किया। इस कार्यक्रम में डॉ. एस.मणिकंदन ने टीम के नेतृत्व किया और हरित परिसर के निर्माण में संस्थान छात्रों की सहभागिता सुनिश्चित की।

साहित्य मंच

मैथिलीशरण गुप्त खड़ी बोली के प्रथम महत्वपूर्ण कवि हैं। श्री पं महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा से आपने खड़ी बोली को अपनी रचनाओं का माध्यम बनाया और अपनी कविता के द्वारा खड़ी बोली को एक काव्य-भाषा के रूप में निर्मित करने में अथक प्रयास किया और इस तरह ब्रजभाषा-जैसी समृद्ध काव्य-भाषा को छोड़कर समय और संदर्भों के अनुकूल होने के कारण नये कवियों ने इसे ही अपनी काव्य-अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। है। मैथली शरण गुप्त जी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य पर प्रस्तुत है उनकी श्रेष्ठ कविता **"जीवन की जय हो"** -

"जीवन की जय हो" -
मृषा मृत्यु का भय है
जीवन की ही जय है ।

जीव की जड़ जमा रहा है
नित नव वैभव कमा रहा है
यह आत्मा अक्षय है
जीवन की ही जय है।

नया जन्म ही जग पाता है
मरण मूढ़-सा रह जाता है
एक बीज सौ उपजाता है
सृष्टा बड़ा सदय है
जीवन की ही जय है।

जीवन पर सौ बार मरूँ मैं
क्या इस धन को गाड़ धरूँ मैं
यदि न उचित उपयोग करूँ मैं
तो फिर महाप्रलय है
जीवन की ही जय है।

मार्गदर्शक
डॉ. राज कुमार सिंह (प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा)
सलाहकार
डॉ. अखिलेश कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापक, एसबीएस
डॉ. राजन झा, सहायक प्राध्यापक, एसबीएस
संपादक
श्री नितिन जैन, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक